'अस्' के स्थान पर होता है। उदाहरण के लिए 'अस्' धातु से लिट् लकार में प्रथम पुरुष-एकवचन की विवक्षा में 'तिप्' और पुनः णल् होकर 'अस् अ' रूप बनता है। यहाँ लिट् च' से लिट्स्थानी 'णल्' के आर्धधातुक होने के कारण प्रकृत सूत्र से 'अस्' के स्थान पर 'भू' होकर 'भू अ' रूप बनेगा। इस स्थिति में युगागम और अभ्यास-कार्य आदि होकर 'बभूव' रूप सिद्ध होता है।

ध्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च।

घोरस्तेश्च एत्वं स्यात् हौ परे अभ्यासलोपश्च

एत्वस्यासिद्धत्वाद्धेर्धिः श्नसोरित्यल्लोपः। तातङ्-पक्षे एत्वं न, परेण तातङा बाधात्। एधि, स्तात्। स्तम्। स्त। असानि। असाव। असाम। आसीत्। आस्ताम्। आसन्। स्यात्। स्याताम्। स्युः। भूयात्। अभूत्। अभविष्यत्। इण गतौ। एति। इतः।